Godda college, Godda

Name of the teacher	Course	Sem	Subject	Title	mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	T.C-204	Meaning and Characteristics of Soc. Group	Pdf

P.Kumar 27/04/12

T.C-201

Unit-6- Group dynamics/ group learning stategies ①

Meaning and characteristics of a social group
(समूह के अर्थ एवं विशेषताएँ)

समूह की अवधारणा / अर्थ (Meaning ~~and~~ concept of Group)

किसी भी संगठन के मानव संसाधन का निर्माण व्यक्ति एवं समूह करते हैं। एक समूह में दो या दो से अधिक व्यक्ति होते हैं जो सामान्य हितों की प्राप्ति के लिए चेतनावस्था में अन्तःक्रिया करते हैं। समूह के सदस्य एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। समूह एक सामाजिक संरचना है जो व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं संतुष्टि से संबंधित विभिन्न प्रकार की सूचनाओं, प्रत्याशाओं एवं अवसरों को प्रदान करता है। किसी भी सामाजिक समूह का सदस्य होने के लिए दो शर्तें आवश्यक हैं (i) वह दो या दो से अधिक व्यक्तियों का संग्रह हो (ii) उन व्यक्तियों के बीच कार्यात्मक संबंध (functional relationship) हो। उदाहरणार्थ - यदि दो अपरिचित व्यक्ति किसी चौराहे पर एक ही साथ टहल रहे हों तो उन्हें समूह नहीं कह सकते, क्योंकि उनके बीच कार्यात्मक संबंध का समान अनुभव (common experience) का अभाव है।

Scanned with CamScanner

परन्तु किसी विक्रेता के द्वारा सम्बोधित किये जाने पर दोनों किसी सामग्री को खरीदने के लिए आपस में समझौता कर लें तो इन्हें एक समूह मानेंगे क्योंकि अब दोनो के बीच कार्यात्मक सम्बन्ध स्थापित हो गया।

लिण्डग्रेन (Lindgren, 1969) के अनुसार "- दो या अधिक व्यक्तियों के किसी कार्यात्मक संबंध में व्यस्त होने पर एक समूह का निर्माण होता है।"

डेविड एच. स्मिथ के अनुसार - " एक समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों का एक समुच्चय है जो संयुक्त रूप से प्रासंगिक संप्रेषण, संयुक्त परिचय, एक या एक से ज्यादा इच्छाओं के साथ नियामक शक्तियों के जाल में बन्धे होते हैं।

व्यक्ति की तरह समूह की अपनी पहचान होती है, जिसकी निश्चित विशेषताएँ होती है, जिनका निरीक्षण तथा माप किया जा सकता है और जिनके संबंध में भविष्यवाणी की जा सकती है। जब समूह का निर्माण हो जाता है तो इसके साथ ही एक विशेष संरचना विकसित हो जाती है - समूह के सदस्यों की भूमिकाएँ निर्धारित हो जाती है और सभी सदस्य अपने अधिकार तथा कर्तव्य के आलोक में एक दूसरे के साथ पारस्परिक क्रिया करने लगते है जिसका उद्देश्य किसी

समान लक्ष्य की प्राप्ति होती है। इस प्रकार समूह एक सामाजिक इकाई का रूप ले लेता है।

शेरिफ एवं शेरिफ (Sherif and Sherif) के अनुसार- "एक समूह एक सामाजिक इकाई है जिसमें कुछ व्यक्ति हैं, जो एक-दूसरे के प्रति अपेक्षाकृत निश्चित पद एवं भूमिका संबंध रखते हैं, और जिनके अपने प्रतिमान या मूल्य होते हैं जो कम से कम समूह के प्रति परिणाम के मामले में सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।"

बेरोन तथा बिर्न (Baron and Byrne 2003) के अनुसार- "समूह एक सामाजिक इकाई है जिसमें दो या अधिक व्यक्ति सामाजिक पारस्परिक क्रिया में लगे होते हैं, जो एक दूसरे के साथ स्थिर, संरचित संबंध रखते हैं, जो एक दूसरे पर अवलंबित होते हैं, सामूहिक लक्ष्यों में साझेदार होते हैं तथा इस बात का बोध करते हैं कि वास्तव में वे एक समूह के अंग हैं।"

मार्विन शॉ के अनुसार- "समूह से आशय दो या दो से अधिक व्यक्तियों से है, जो परस्पर इस प्रकार से अन्तःक्रियाएँ करते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरों को प्रभावित करता है और उनसे प्रभावित होता है।"

अधिकांश मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रियों ने समूह को परिभाषित करते समय विशेष रूप से अन्तःक्रियात्मक सामाजिक समूह को ध्यान में रखा है। समूह की→

परिभाषाओं से सुस्पष्ट होता है कि समूह की परिभाषा सदस्य, अन्तःक्रिया और निष्पादन के चारों ओर घूमती है। इन घटकों के आधार पर समूह को व्यक्तियों के समुच्चय मात्र से अलग किया जा सकता है। उदाहरणार्थ - किसी बस - अड्डे पर प्रतीक्षारत व्यक्तियों या एक क्रिकेट मैच को देखने के लिए एकत्र भीड़ को 'समूह' की संज्ञा नहीं दी जा सकती है, क्योंकि उनमें सदस्य, अन्तःक्रिया व निष्पादन जैसे घटकों का अभाव होता है।

समूह की विशेषताएँ (Characteristics of Group) -

⇒ सदस्यता (Membership) - एक समूह में दो या दो से अधिक सदस्य होते है।

⇒ अंतः क्रिया (Interaction) - एक समूह में दो या दो से ज्यादा सदस्यों के बीच पारस्परिक अन्तः क्रिया होती है। व्यापक अर्थ में इसे संप्रेषण कहते है।

⇒ गतिविधियाँ (Activities) - सभी तरह के समूह किसी न किसी कि गतिविधि में संलग्न होते है। कार्य समूह कार्य में संलग्न होता है ठीक इसी तरह दोस्ती समूह बात विचार या हँसी - मजाक में संलग्न होता है। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि समूह के सभी सदस्य एक साथ समूह की गतिविधियों मे संलग्न हो।

Scanned with CamScanner

⇒ मानक (Norms) - सभी समूहों का कोई न कोई मानक एवं लोकाचार (Ethos) होता है। सभी समूहों की अपनी एक खास संस्कृति एवं व्यवहार का स्तर होता है जिसके आधार समाज में उनकी पहचान होती है। समूह के मानक समूह द्वारा तय किये जाते हैं तथा सभी सदस्यों द्वारा स्वीकृति प्राप्त होती है।

⇒ लगाव (Cohesion) - कोई समूह विकसित इसलिए होता है क्योंकि यह लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समूह जितना ज्यादा आवश्यकताओं को संतुष्ट करता है उतना ही ज्यादा लोगों को समूह में आने के लिए आमंत्रित करने में सक्षम होता है। आवश्यकता संतुष्टि के कारण सदस्यों के बीच मोह या आकर्षण उत्पन्न होता है इसे ही लगाव कहा जाता है।

⇒ अनुरूपता (Conformity) - अगर सदस्यों के लक्ष्य एवं समूह के लक्ष्य में अनुरूपता हो तो इसका अर्थ है कि समूह में लगाव भी मौजूद है।

⇒ अभिज्ञता (Awareness) - समूह के सदस्य एक दूसरे के बारे में पूर्णतः भिज्ञ हों और किसी न किसी तरह से एक दूसरे से संबंधित हों। सदस्यों के बीच का संबंध अभिरुचि, लक्ष्य एवं गतिविधियों के आधार पर निर्धारित हो सकता है।

⇒ समूह प्रत्यक्षण (Group Perception) - समूह के सदस्य में संयुक्त पहचान के कारण एक समूह के सदस्य दूसरे समूह के सदस्य से भिन्न होते हैं।

⇒ अनौपचारिक नेतृत्व (Informal Leadership) - सदस्यों के बीच से एक समूह का नेता हो जो सदस्यों द्वारा

Scanned with CamScanner

चयनित या मनोनीत हो। यद्यपि समूह के नेतृत्व को कोई औपचारिक अधिकार तो नहीं होता है परन्तु नेतृत्व सदस्यों से ही अधिकार प्राप्त कर लेता है। यह भी हो सकता है कि एक समूह में विभिन्न उद्देश्यों के लिए एक से ज्यादा नेता हो।

⇒ एक समान उद्देश्य या लक्ष्य (Common objectives or Goal) - समूह के सभी सदस्यों का एक समान उद्देश्य या लक्ष्य हो साथ ही साथ वह उद्देश्य समूह के उद्देश्य के अनुरूप हो।

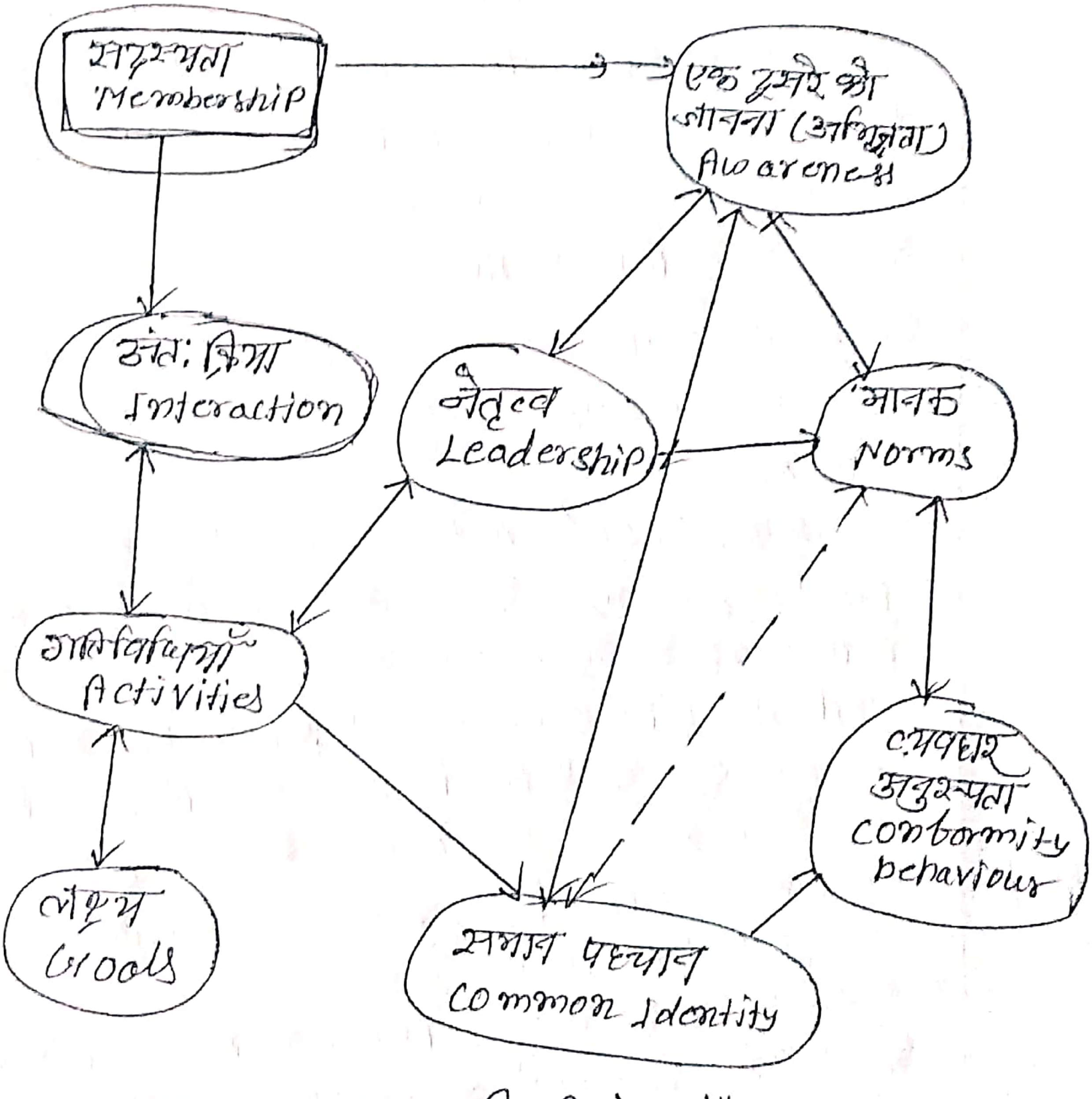

समूह की विशेषताएँ

नोट- चित्र की सहायता से समूह की विशेषताएँ को समझा जा सकता है =